कृतज्ञता ज्ञापन

शोध कार्य की प्रक्रिया दीर्धकालिक व सविस्तारित होती है। इसलिए शोधार्थी को अनेक व्यक्तियों का सानिध्य व सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अतः शोध कार्य के इस पथ पर अग्रसारित करने तथा शोध–प्रबन्ध की पूर्णता हेतु जिन पूज्यनीय गुरूजनों, विद्वानों व मेरे साथ विश्वविद्यालय में कार्यरत महानुभावों का सहयोग मुझे प्राप्त हुआ। उन सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

सर्वप्रथम में उस सत्चित आनन्द ईश्वर के प्रति नतमस्तक हूँ, जिनकी अनन्त कृपा से मेरा शोध कार्य सम्पन्न हुआ।

ईश्वर के बाद दूसरा नाम मेरे श्रध्येय गुरू व पूर्व में दयालबाग विश्वविद्यालय के तबला विभाग में रीडर **स्वर्गीय डॉ॰ नलिन सुन्दरम् भट्टजी** के प्रति नतमस्तक हूँ। जिन्होंने मेरे लिए एक नवीन व चुनौतीपूर्ण विषय का शोध प्रबन्ध के लिए चयन किया। इस शोध प्रबन्ध के माध्यम से में उनको श्रद्धाजंलि अर्पित करती हूँ। परन्तु मेरा दुर्भाग्य कि वो बीच मझधार में मुझे ही नहीं अपितु सभी अपने सम्बन्धी व परिवार के सदस्यों को छोड़कर ब्रह्मलीन हो गये। लेकिन ईश्वर के सामने किसी का भी जोर नहीं चलता। उस समय शोधार्थी की स्थिति भँवर में फसी नाव के समान थी। जिसने उपरोक्त शोध कार्य करने का इरादा ही छोड़ दिया था क्योंकि शोध अनुसंधान एक जटिल कार्य है, उचित मार्ग दर्शन के अभाव में इसमें निहित जटिलताओं एवं चुनौतियों का निराकरण सम्भव नहीं होता।

परन्तु मेरा यह परम् सौभाग्य है कि इस दुर्गम परिस्थिति से उबारने में मुझे उस समय आसीन संगीत विभाग की अध्यक्षा ज्ञानात्मक गरिमा से परिपूर्ण, सरल हृदय, ममतामयी व छात्र हितेक्षी **प्रो. वी. प्रेम कुमारी**, जिनके मार्गदर्शन व सहयोग से, मैं उन विपरीत परिस्थितियों से उबर सकी व शोध–प्रबन्ध करने के लिए अपने को

तैयार कर सकी। ऐसी ममतामयी माँ स्वरूपा को मैं अंतःकरण से शत्–शत् प्रणाम करती हूँ तथा अब विभाग से सेवा निवृत्त होने के बाद भी उनके सहयोग के लिए उन्हें धन्यवाद देती हूँ।

साथ ही ऐसे जटिल एवं चुनौतीपूर्ण समय में इस अनुसंधान के लिए सहानुभूति पूर्ण निर्देशन में मुझे शोध कार्य कराने में निर्देशित करने के लिए मैं **डॉ॰ नीलू शर्मा जी** (प्रमुख तबला विभाग) को अंतःकरण से आभार अर्पित करती हूँ, जिन्होंने अपनी पारिवारिक जटिलताओं के होने के बाद भी मेरे कार्य को प्राथमिकता देते हुऐ अपनी ज्ञान ज्योति से पग–पग पर आने वाली बाधाओं को दूर कर मेरे प्रगति पथ को सुदीप्त किया।

मैं अत्यधिक कृतार्थ हूँ उन ममतामयी सरल हृदय अपनी संगीत विभागाध्यक्षा **प्रो॰ सुभद्रा कुमारी सत्संगी जी** की, जिन्होंने मुझे शोध कार्य करते समय हर प्रकार का सहयोग दिया।

इस जटिल पथ परचलते समय कितनी बार मुझे दिग्भ्रमित व निराश होने पर अपने निश्चल व स्नेह युक्त व्यवहार से प्रोत्साहित कर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने वाले श्रद्धेय **प्रो॰ रवि कुमार भटनागरजी** (प्रो॰ संगीत विभाग, दयालबाग एजूकेशनल इन्स्ट्रीट्यूट) को भी हृदय से धन्यवाद देती हूँ।

मैं **डॉ॰ रश्मि श्रीवास्तव जी**, **डॉ॰ नीतू गुप्ताजी** के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने इस कार्य को पूर्ण करते समय पग–पग पर मेरा हौसला बढ़ाया।

साथ ही मैं उन सभी तबला मनीषियों श्रध्येय **प्रो॰ मानस दास गुप्ताजी**, **प्रो॰ मुकुन्द भालजी** (खैरागढ़), **डॉ॰ अजय अष्टपुत्रेजी** (बड़ोदा), **डॉ॰ विद्यानाथ सिंहजी** (रायपुर), **श्री जफर मोहम्मदजी** (जयपुर), **पं॰ फतेह सिंह गंगानीजी** (दिल्ली), **श्री सुधीर मांईणकर** (मुम्बई) आदि के प्रति भी हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने अपने मूल्यवान विचारों से मुझे लाभान्वित कर मेरा पथ प्रदर्शन किया।

मैं अपनी **माता श्रीमती मिथलेश जौहरी जी** व **पिता श्री एस.एस. जौहरीजी** के प्रति नत्मस्तक हूँ, जिन्होंने अपने कष्टों को ध्यान में न रखते हुऐ तन–मन–धन से इस शोध–प्रबन्ध के पूर्ण होने तक हर संभव सहयोग दिया तथा हताश होने पर अपने निश्चल व स्नेह युक्त व्यवहार से प्रोत्साहित भी किया।

मैं अपनी ज्येष्ठ बहनों **कु॰ राशी जौहरी, श्रीमती डॉ॰ ऋतु जौहरी रंजन** व **कु॰ रिचा जौहरी** के प्रति भी आभारी हूँ जिन्होंने अपने सत्परामर्श, असीमित सहयोग से हर समय मेरा मार्ग प्रदर्शन किया।

मैं टंकणकर्त्ता **श्री सुजीत कुमार सिंह** (गजानन कम्प्युटर ग्राफिक्स, दयालबाग, आगरा) के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने सुन्दर व प्रभावशाली टंकण कार्य कर मेरे शोध–प्रबन्ध को सम्पूर्णता प्रदान की।

अन्त में, मैं उन सभी महानुभावों को धन्यवाद देती है, जिन्होंने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष किसी भी प्रकार से इस शोध कार्य के प्रणयन में अपना सहयोग प्रदान किया।

शोधकर्त्री

रीमा जौहरी